



Ayurved Mera Mahan

Jai Ayurved Jai Dhanwantari

Mahan

Ayurved Mera Mahan
Ayurved Amrutnam

AYURVEDIC QUESTION BANK

WWW.AYURVEDMERAMAHAN.IN.NET

Written by:- Gautam Rishi
Published by:- Harish Kumar



COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]



ॐ श्री गणेशाय नमः॥

५

ॐ श्री धन्वंतरये नमः॥

चरकसंहिता प्रश्न बैंक

"It contain Ayurvedic multiple choice 1000 questions along with answers".

आयुरस्मिन् विद्यते अनेन वा आयुर्विन्दतीत्यायुर्वदः। (च.सू. १/१३)

अर्थात् जिसके द्वारा आयुर्वद का ज्ञान प्राप्त हो उसे आयुर्वद कहते हैं।



अनेन पुरुषो यस्माद् आयुर्विन्दति वेति च ।

तस्मान्मुनिवरैरेष 'आयुर्वद' इति स्मृतः ॥

हिताहितं सुखं दुःखं आयुस्तस्य हिताहितम् ।

मानं च तच्च यत्रोक्तं आयुर्वदः स उच्यते ॥ च.सू.३.४१॥

अर्थात् हितायु अहितायु सुखायु एवं दुःखायु इस प्रकार चतुर्विध जो आयु हैं उस आयु के हित तथा अहित अर्थात् पथ्य और अपथ्य आयु का प्रमाण एवं उस आयु का स्वरूप जिसमें कहा गया हो, वह आयुर्वद कहा जाता है।

GAUTAM RISHI

Basically this book is based upon the study of health science history of Ayurveda & Charak Sahinta, it contain Ayurvedic multiple choice 1000 questions along with answers.

Copyright © 2020 Ayurved Mera Mahan .

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, including photocopying, recording, or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the publisher, except in the case of brief quotations embodied in critical reviews and certain other noncommercial uses permitted by copyright law. For permission requests, write to the publisher, addressed “Attention: Permissions Coordinator,” at the address below.

Google Play Book id: **GGKEY: 7F04KUHL5RG**

Disclaimer:

The publisher and the author make no guarantees concerning the level of success you may experience by following the advice and strategies contained in this book, and you accept the risk that results will differ for each individual and the author strongly recommend that you consult with your physician before beginning any exercise program. This book has been written with the help of many sources such as Internet, Charak Sahinta and other Ayurvedic books. The author is not a licensed healthcare care provider and represents that they have no expertise in diagnosing, examining, or treating medical conditions of any kind, or in determining the effect of any specific exercise on a medical condition. The testimonials and examples provided in this book show exceptional results, which may not apply to the average reader, and are not intended to represent or guarantee that you will achieve the same or similar results.

Edition:- First Edition 2020

Front cover image & Book design by: Gautam Rishi & Harish Kumar.

Author & Publisher:

Gautam Rishi & Harish Kumar
Rohtak, Haryana
PIN: - 124001

Instagram: [@ayurved_mera_mahan](#)

Email id: ayurvedmeramahan@gmail.com

Website: www.ayurvedmeramahan.in.net & www.namberdar.com

Price.₹210

Ayurved Mera Mahan
Ayurved Amrutnam

Dedication

This book is dedicated to our father (**Vaid. SHREE NARAYAN NAMBERDAR, Rohtak Haryana, PIN: 124001**) for his continuous support, to my mother for her enduring encouragement during the writing of this book, and to all those in the promoting natural Ayurved who have ayurved passion to treatment patients and thus make our world safe & healthy.

Gautam Rishi & Harish Kumar

Ayurved Mera Mahan
Ayurved Amrutnam

आयुर्वेद प्रश्नमाला

(1) 'औदभिद' किसका प्रकार है।

- (a). द्रव्य
- (b). लवण
- (c). जल
- (d). उपर्युक्त सभी

(2) 'उदुग्बर' है।

- (a). वनस्पति
- (b). वानस्पत्य
- (c). वीरुद्ध
- (d). औषधि

(3) फल पकने पर जिसका अन्त हो जाए वह है?

- (a). वनस्पति
- (b). वानस्पत्य
- (c). वीरुद्ध
- (d). औषधि

(4) जिनमें सीधे ही फल दृष्टिगोचर हो - वह है?

- (a). वनस्पति
- (b). वानस्पत्य
- (c). वीरुद्ध
- (d). औषधि

(5) सुश्रुतानुसार 'जिसमें पुष्प और फलदोनों आते हैं' - वह स्थावर कहलाता है।

- (a). वनस्पत्य
- (b). वानस्पत्य
- (c). वृक्षा
- (d). उपर्युक्त सभी

(6) 16 मूलिनी द्रव्यों में शामिल नहीं है।

- (a). बिम्बी
- (b). हस्तिपर्णी
- (c). गवाक्षी
- (d). प्रत्यक्षेणी

(7) चरकोक्त 16 मूलिनी द्रव्यों में 'छर्दन' किसका कार्य है।

- (a). शणपुष्पी
- (b). बिम्बी
- (c). हैमवती
- (d). उपर्युक्त सभी



Ayurved Mera Mahan
Ayurved Amrutnam

(8) चरकोक्त 16 मूलिनी द्रव्यों में 'विरेचन' हेतु कितने द्रव्य हैं।

- (a). दश
- (b). एकादश
- (c). षोडश
- (d). चतुर्विंश्च

(9) चरकोक्त 19 फलिनी द्रव्यों में शामिल नहीं हैं।

- (a). क्लीतक
- (b). आरघ्वध
- (c). प्रत्यक्पुष्पा
- (d). सदापुष्पी

(10) चरकोक्त 19 फलिनी द्रव्यों में शामिल नहीं हैं?

- (a). आमलकी
- (b). हरीतकी
- (c). कम्पिल्लक
- (d). अन्तकोटरपुष्पी

(11) चरकानुसार क्लीतक (मुलेठी) के कितने भेद होते हैं।

- (a). 2
- (b). 3
- (c). 5
- (d). उपर्युक्त कोई नहीं

(12) चरकोक्त 19 फलिनी द्रव्यों में नस्य हेतु कितने द्रव्य हैं।

- (a). 1
- (b). 2
- (c). 3
- (d). 8

(13) चरकोक्त 19 फलिनी द्रव्यों में 'विरेचन' हेतु कितने द्रव्य हैं।

- (a). दश
- (b). एकादश
- (c). अष्ट
- (d). एकोनविशंति

(14) स्नेहना जीवना बल्या वर्णापचयवर्धनाः। - किसका गुण है।

- (a). मांस
- (b). मद्य
- (c). पयः
- (d). महास्नेह

(15) महास्नेह की संख्याहै।

- (a). 2
- (b). 3
- (c). 4
- (d). 8

(16) चरकानुसार 'प्रथम लवण' है।



Ayurved Mera Mahan
Ayurved Amrutnam

- (a). सैन्धव
- (b). सौवर्चल
- (c). सामुद्र
- (d). विड

(17) रस तरंगिणी के अनुसार 'प्रथम लवण' है।

- (a). सैन्धव
- (b). सौवर्चल
- (c). सामुद्र
- (d). विड

(18) चरकानुसार 'पंच लवण' में शामिल नहीं है ?

- (a). सौवर्चल
- (b). सामुद्र
- (c). औद्भिद
- (d). रोमक

(19) रस तरंगिणी के अनुसार 'पंच लवण' में शामिल नहीं है ?

- (a). सौवर्चल
- (b). सामुद्र
- (c). औद्भिद
- (d). रोमक

(20) अष्टमूत्र के संदर्भ में 'लाघवं जातिसामान्ये स्त्रीणां पुंसां च गौरवम्' - किस आचार्य का कथन है।

- (a). सुश्रुत
- (b). चरक
- (c). हारीत
- (d). भाव प्रकाश

(21) चरकानुसार मूत्र में 'प्रधान रस' होता है।

- (a). तिक्त
- (b). कटु
- (c). लवण
- (d). कषाय

(22) चरकानुसार मूत्र का 'अनुरस' होता है।

- (a). तिक्त
- (b). कटु
- (c). लवण
- (d). कषाय

(23) पाण्डुरोग उपसृष्टानामुत्तमं....चोत्यते। श्लेष्माणं शमयेत्पीतं मारुतं चानुलोमयेत्।

- (a). मूत्र
- (b). गोमूत्र

Ayurved Mera Mahaan
Ayurved Amrutnam

(c). शर्म

(d). पितविरेचन

(24) चरकानुसार मूत्र का गुण है।

(a). वातानुलोमन

(b). पितविरेचक

(c). कफशामक

(d). उपर्युक्त सभी

(25) वाग्भट्टानुसार मूत्र होता है।

(a). पितविरेचक

(b). पितवर्धक

(c). विषापह

(d). रसायन

(26) 'मूत्रं मानुषं च विषापहम्।' - किस आचार्य का कथन है -

(a). सुश्रुत

(b). चरक

(c). अष्टांग संग्रह

(d). भाव प्रकाश

(27) हस्ति मूत्र का रस होता है।

(a). तिक्त

(b). कटु, तिक्त

(c). लवण

(d). क्षार

(28) माहिषमूत्र का रस होता है।

(a). तिक्त

(b). कटु, तिक्त

(c). लवण

(d). क्षार

(29) किसका मूत्र 'सर' गुण वाला होता है।

(a). हस्ति

(b). उष्ट्र

(c). माहिषी

(d). वाजि

(30) किसका मूत्र 'पथ्य' होता है।

(a). गोमूत्र

(b). अजामूत्र

(c). उष्ट्रमूत्र

(d). खरमूत्र



Ayurved Mera Mahan
Ayurved Amrutnam

(31) कुष्ठ व्रण विषापहम् - मूत्र है।

- (a). हस्ति
- (b). आवि
- (c). माहिषी
- (d). वाजि

(32) चरकानुसार 'अर्श नाशक' मूत्र है।

- (a). हस्ति
- (b). उष्ट्र
- (c). माहिषी
- (d). उपर्युक्त सभी

(33) उन्माद, अपस्मार, ग्रहबाधा नाशकमूत्र है?

- (a). हस्ति
- (b). उष्ट्र
- (c). खर
- (d). वाजि

(34) चरक ने 'श्रेष्ठं क्षीणक्षतेषु च' किसके लिए कहा है।

- (a). महास्नेह
- (b). मांस
- (c). पयः
- (d). नागबला

(35) पाण्डुरोगेऽम्लपिते च शोषे गुल्मे तथोदरे। अतिसारे ज्वरे दाहे च शवयथौ च विशेषतः। - किसके लिए कहा है।

- (a). महास्नेह
- (b). अष्टमूत्र
- (c). पयः
- (d). घृत

(36) चरक संहिता में मूलनी, फलिनी, लवण और मूत्र की संख्या क्रमशः है।

- (a). 19, 16, 5, 8
- (b). 16, 19, 5, 8
- (c). 16, 19, 8, 5
- (d). 19, 16, 4, 8

(37) शोधनार्थ वृक्षों की संख्याकी संख्या है।

- (a). 2
- (b). 3
- (c). 4
- (d). 6

(38) चरकानुसार क्षीरत्रय होता है।

- (a). अर्क, स्नुही, वट
- (b). अर्क, स्नुही, अश्मन्तक
- (c). अर्क, वट, अश्मन्तक

(d). उपर्युक्त कोई नहीं

(39) 'अर्कक्षीर' का प्रयोग किसमें निर्दिष्ट है।

(a). वमन में

(b). विरेचन में

(c). वमन, विरेचन दोनों में

(d). उपर्युक्त कोई नहीं

(40) चरकानुसार अश्मन्तक का प्रयोग किसमें निर्दिष्ट है।

(a). वमन में

(b). विरेचन में

(c). वमन, विरेचन दोनों में

(d). उपर्युक्त कोई नहीं

(41) चरक ने तिल्वक का प्रयोग बतलाया है।

(a). वमन में

(b). विरेचन में

(c). वमन, विरेचन दोनों में

(d). उपर्युक्त कोई नहीं

(42) चरकानुसार "परिसर्प, शोथ, अर्श, दद्रु, विद्रधि, गण्ड, कुष्ठ और अलजी"में शोधन के लिए प्रयुक्त होता है।

(a). पूतीक

(b). कृष्णगंधा

(c). तिल्वक

(d). उपर्युक्त सभी

(43) 'योगविन्नारूपजस्तासां उच्यते।

(a). श्रेष्ठतम् भिषक

(b). तत्वविद्

(c). छद्मचर वैद्य

(d). भिषक

(44) पुरुषं पुरुषं वीक्ष्य स ज्ञेयो भिषगुत्तमः। - किसका कथन हैं।

(a). चरक

(b). सुश्रुत

(c). वारभट्ट

(d). हारीत

(45) यथा विषं यथा शस्त्रं यथाग्निरशर्नियथा। - किसका कथन हैं।

(a). चरक

(b). सुश्रुत

(c). वारभट्ट

(d). भाव प्रकाश

(46) चरकानुसार 'भिषगुत्तम' है।

Ayurved Mera Mahan
Ayurved Amrutnam

- (a). तस्मात् शास्त्र०र्थं विजाने प्रवृत्तौ कर्मदर्शने।
- (b). हेतो लिंगे प्रशमने रोगाणाम् अपुनभवे।
- (c). विद्या वितर्की विजानं स्मृतिः तत्परता क्रिया।
- (d). योगमासां तु यो विद्यात् देशकालोपपादितम्।

(47) ताम्र का प्रथम उल्लेख किसने किया हैं।

- (a). सुश्रुत
- (b). चरक
- (c). सोढल
- (d). नागार्जुन

(48) "पुत्रवेदवैनं पालयेत आतुरं भिषक्।" - किसका कथन हैं।

- (a). चरक
- (b). सुश्रुत
- (c). वाग्भट्ट
- (d). काश्यप

(49) चरक संहिता मे अन्तः परिमार्जन द्रव्यों से सम्बद्धित अध्याय है।

- (a). दीर्घजीवतीय
- (b). अपामार्गतण्डुलीय
- (c). आरवधीय
- (d). षडविरेचनशताश्रितीय

(50) शिरोविरेचनार्थ 'अपामार्ग' का प्रयोज्यांग है?

- (a). तण्डुल
- (b). बीज
- (c). फल
- (d). फल रज चूर्ण

(51) 'वचा एवंज्योतिष्मतिदानों द्रव्यों को शिरोविरेचनद्रव्यों के गण में कौनसे आचार्य ने शामिल किया है।

- (a). सुश्रुत
- (b). चरक
- (c). वाग्भट्ट
- (d). a, b दोनों

(52) शिरोविरेचन द्रव्यों में कौनसा रस शामिल नहीं होता है।

- (a). मधुर
- (b). अम्ल
- (c). लवण
- (d). a, b दोनों

(53) चरक ने अपामार्गतण्डुलीय अध्याय में 'वचा' को कौनसे वर्ग में शामिल किया है।

- (a). शिरोविरेचन
- (b). वमन

- (c). विरेचन
- (d). आस्थापन/अनुवासन

(54) चरक ने अपामार्गतण्डुलीय अध्याय में 'एण्ड' को कौनसे वर्ग में शामिल किया है।

- (a). शिरोविरेचन
- (b). वमन
- (c). विरेचन
- (d). आस्थापन/अनुवासन

(55) चरक संहिता में सर्वप्रथम 'पंचकर्म' शब्द कौनसे अध्याय मेंआया है।

- (a). दीर्घन्जीवतीय
- (b). अपामार्गतण्डुलीय
- (c). आरग्वदीय
- (d). षड्विरेचनशताश्रितीय

(56) चरकानुसार औषध की सम्यक् योजनाकिस पर निर्भर करती है ?

- (a). औषध की मात्रा और काल पर
- (b). रोगी के बल और कालपर
- (c). रोगी के कोष्ठऔर अग्निबल पर
- (d). रोगी के वय और कालपर

(57)यवाग्वः परिकीर्तिताः।

- (a). अष्टादश
- (b). षड्
- (c). चर्तुविंशति
- (d). अष्टाविंशति

(58) चरकोक्त 28 यवाग् में कुल कितनी पेया हैं।

- (a). 4
- (b). 6
- (c). 32
- (d). 28

(59) किसके क्वाथ से सिद्ध यवाग् विषनाशक होतीहैं।

- (a). शिरीष
- (b). सिन्धुवार
- (c). सोमराजी
- (d). विडंग

(60) यवानां यमके पिप्पल्यामलकैः श्रृता। - यवाग् का कर्महै।

- (a). कण्ठरोगनाशक
- (b). वातानुलोमक
- (c). पक्वाशयशूल रुजापहा
- (d).रुक्षणार्थ

(61) यमके मदिरा सिद्धा.....यवाग्।



Ayurved Mera Mahan
Ayurved Amrutnam

- (a). कण्ठरोगनाशक
- (b). वातानुलोमक
- (c). पक्वाशयशूल रुजापहा
- (d). रुक्षणार्थ

(62) दधित्थबिल्वचांगेरीतक्रदाडिमा साधिता।- यवागू है।

- (a). दीपनीय, शूलघ्नयवागू
- (b). आमातिसारघ्नी पेया
- (c). रक्तातिसारनाशक पेया
- (d). पाचनी, ग्राहिणी पेया

(63) तक्रसिद्धा यवागूः।

- (a). घृतव्यापद नाशक
- (b). तैलव्यापद नाशक
- (c). मद्यव्यापद नाशक
- (d). क्षुधानाशक

(64) तक्रपिण्याक साधिता यवागू।

- (a). घृतव्यापद नाशक
- (b). तैलव्यापद नाशक
- (c). मद्यव्यापद नाशक
- (d). क्षुधानाशक

(65) ताम्रचूडरसे सिद्धा.....।

- (a). शिशनपीडाशामकः
- (b). शुक्रमार्गरुजापहा
- (c). रेतोमार्गरुजापहा
- (d). उपर्युक्त सभी

(66) दशमूल क्वाथ से सिद्ध यवागू होती हैं?

- (a). श्वासनाशक
- (b). कासनाशक
- (c). हिक्कानाशक
- (d). उपर्युक्तसभी

(67) चरकानुसार मुर्ग का पर्याय है।

- (a). ताम्रचूड
- (b). चरणायुधा
- (c). कुक्कुट
- (d). उपर्युक्तसभी

(68) उपोदिकादधिभ्यां तु सिद्धा.....यवागू।

- (a). विषमज्वरनाशक
- (b). मदविनाशिनी



Ayurved Mera Mahan
Ayurved Amrutnam

- (c). भेदनी
- (d). रोचक

(69) चरकानुसार चिकित्सक की अर्हताएँमें शामिल नहीं है।

- (a). हेतुज
- (b). व्यवसायी
- (c). युक्तिज
- (d). जितेन्द्रय

(70) चरक संहिता मे बर्हिपरिमार्जन द्रव्यों से सम्बद्धित अध्याय है।

- (a). दीर्घ×जीवतीय
- (b). अपामार्गतण्डुलीय
- (c). आरग्वधीय
- (d). षडविरेचनशताश्रितीय

(71) चरकोक्त आरग्वधीय अध्याय में कुष्ठहर कुल कितने 'लेप' बताए गए हैं।

- (a). 32
- (b). 15
- (c). 6
- (d). 16

(72) चरकोक्त आरग्वधीय अध्याय में वातविकारनाशककुल कितने 'लेप' बताए गए हैं।

- (a). 5
- (b). 6
- (c). 7
- (d). 4

(73) चरकोक्त आरग्वधीय अध्याय में कितने 'प्रघर्ष' बताए गए हैं।

- (a). 32
- (b). 4
- (c). 1
- (d). शून्य

(74) नतोत्पलं चन्दनकुष्ठयुक्तं शिरोरुजायां सघृतं प्रदेहः।

- (a). विषध्न
- (b). शिरोरुजायां
- (c). स्वेदहर
- (d). कुष्ठहर

(75) शिरीष और सिन्धुवार के लेप होता हैं?

- (a). विषध्न
- (b). शरीरदौर्गन्धयहर
- (c). स्वेदहर
- (d). कुष्ठहर

(76) तेजपत्र, सुगन्धबाला, लोध, अभय और चन्दन के लेप का प्रयोग किस संदर्भ में हैं?

- (a). विषध्न
- (b). शरीरदौर्गन्धयहर
- (c). स्वेदहर

*Ayurved Mera Mahaan
Ayurved Amrutnam*

(d). कुष्ठहर

(77) चक्रपाणि के अनुसार 'अभय' किस औषध का पर्याय हैं?

(a). हरीतकी

(b). उशीर

(c). तगर

(d). देवदारु

(78) चरकसंहिता में प्रलेप की मोटाई और उसे लगाने के निर्देशों का वर्णन कौनसे अध्याय में है।

(a). अपामार्गतण्डुलीय

(b). आरघ्वधीय

(c). विसर्पचिकित्सा

(d). वातरक्तचिकित्सा

(79) चरकोक्त आरघ्वधीय अध्याय में कुल कितने सूत्र हैं।

(a). 30

(b). 32

(c). 34

(d). 36

(80) चरक ने विरेचन द्रव्यों के कितने आश्रय बतलाए हैं।

(a). 5

(b). 6

(c). 7

(d). 8

(81) चरक ने शिरो विरेचन द्रव्यों के कितने आश्रय बतलाए हैं।

(a). 5

(b). 6

(c). 7

(d). 8

(82) सप्तला-शंखिनी के विरेचन योगों की संख्या हैं।

(a). 45

(b). 48

(c). 39

(d). 60

(83) धामार्गव के वामकयोगों की संख्या हैं।

(a). 45

(b). 48

(c). 39

(d). 60

(84) दन्ती-द्रवन्ती के विरेचन योगों की संख्या हैं।

(a). 45

(b). 48

(c). 39

(d). 60

(85) स्वरसः, कल्कः, श्रृतः, शीतः फाण्टः कषायश्चेति।।

(a). पूर्व पूर्व बलाधिका

(b). यथोक्तरं ते लघवः प्रदिष्टा

(c). तेषां यथापूर्व बलाधिक्यम्



Ayurved Mera Mahan
Ayurved Amrutnam

(d). कोई नहीं

(86) 'पंचविधि कषाय कल्पनाओं' के संदर्भ में 'पंचधैवं कषायाणां पूर्व पूर्व बलाधिका' किस आचार्य ने कहा है।

(a). सुश्रुत

(b). चरक

(c). वाग्भट्ट

(d). शारंगदर्घर

(87) "द्रव्यादापोत्थितातोये तत्पुनर्निशि संस्थितात्"- किस कषाय कल्पना के लिये कहा गया है।

(a). क्वाथ

(b). कल्क

(c). शीत

(d). फाण्ट

(88) 'यः पिण्डो रसपिष्टानां स कल्कः परिकार्तितः' किस आचार्य का कथन है।

(a). सुश्रुत

(b). चरक

(c). चक्रपाणि

(d). शारंगदर्घर

(89) चरकमत से कषाय कल्पनाओं का प्रयोग किस परनिर्भर करता है?

(a). व्याधि के बल पर

(b). आतुर के बल पर

(c). व्याधि एवं आतुर के बल पर

(d). कोई नहीं

(90) चरकके पंचाशन्महाकषाय में स्थापन महाकषायों की संख्या है।

(a). 3

(b). 5

(c). 6

(d). 7

(91) चरक के पंचाशन्महाकषाय में निग्रहण महाकषायों की संख्या है।

(a). 3

(b). 5

(c). 6

(d). 7

(92) चरकोक्त पचास महाकषायों में सबसे अधिक 11 बार सम्मिलित द्रव्य है।

(a). मुलेठी

(b). आरग्वध

(c). मोचरस

(d). पिप्पली

(93) चरकोक्त पचास महाकषायों में सम्मिलित कुल द्रव्यों की संख्या है।

(a). 50

(b). 500

(c). 276

(d). 352



COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]



(94) चरक संहिता में महाकषाय का वर्ण किस स्वरूप में हैं।

- (a). लक्षण व उदाहरण
- (b). कर्म और उदाहरण
- (c). कर्म और लक्षण (d). उपर्युक्तकोई नहीं

(95) चरकोक्त जीवनीय महाकषाय में अष्टवर्ग के कितने द्रव्य शामिल हैं।

- (a). 8
- (b). 5
- (c). 6
- (d). 7

(96) 'भारद्वाजी' किसका पर्याय है।

- (a). सारिवा
- (b). वनकपास
- (c). मंजिष्ठा
- (d). धातकी

(97) चरकने निम्न किस महाकषाय का वर्णन नहीं किया है।

- (a). दीपनीय
- (b). पाचनीय
- (c). कण्ठय
- (d). संजास्थापक

(98) चक्रपाणि के अनुसार 'सदापुष्पी' किसका पर्याय है।

- (a). कमल
- (b). कुमुद
- (c). आरग्वध
- (d). अर्क

(99) चरक ने अर्जुन का प्रयोग किस महाकषाय में वर्णित किया है।

- (a). हृदय
- (b). शूल प्रशमन
- (c). मूत्र संग्रहणीय
- (d). उदर्दे प्रशमन

(100) चरकोक्त ज्वरहर दशेमानि के मध्य में किसको ग्रहण नहीं किया है।

- (a). सारिवा
- (b). मंजिष्ठा
- (c). मुस्ता
- (d). पाठा

(101) चरक संहिता के आदय उपदेष्टा हैं-

- (a). पुर्नवसु आत्रेय
- (b). अग्निवेश
- (c). चरक



Ayurved Mera Mahan
Ayurved Amrutnam